Episode - 25

एपीसोड शीर्षक :

“समझ का नया संसार”

अवधारणा एवं समन्वय : Dr B.K. Tyagi

स्क्रिप्ट : Dr Manas Pratim Das **हिंदी अनुवाद :** Shriniwas Oli

(धारावाहिक के इस अंक में उस स्थिति की कल्पना की गई है जब मशीनें आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस की बदौलत खुद ही नई चीजें सीखना शुरू कर देती हैं। इसमें आर्टिफीशियल न्यूरल नेटवर्क (Artificial Neural Network) का भी जिक्र है, जो कि मशीन इंटेलीजेंस की बुनियाद है। कथा की शुरुआत एक हादसे से होती है। निर्भय, एक बुद्धिमान रोबोट है जो एक हादसे में घायल हो गया है। इस दुर्घटना में एक इंसान भी जख्मी हो जाता है। दोनों को एक अस्पताल में दाखिल कराया जाता है लेकिन अगली सुबह दोनों वहां से लापता हो जाते हैं। इस रोबोट को बनाने वाले इंजीनियर का दावा है कि रोबोट की सीखने की प्रक्रिया में कुछ ऐसा बदलाव हुआ जो उन दोनों के लापता होने की वजह बना। धारावाहिक की इस कड़ी में रोबोट्स के ज्यादा समझदार बनने और उसके बाद की नई परिस्थितियों के रहस्य से पर्दा उठाने की कोशिश की गई है।)

पात्र परिचय :

अमित : (35 वर्ष) डॉक्टर

मेहर : (30 वर्ष) इंजीनियर

लिली : (23 वर्ष / ट्रेनी इंजीनियर)

निधि : (23 वर्ष / ट्रेनी इंजीनियर)

रघु : (23 वर्ष / ट्रेनी इंजीनियर)

नैयर : (50 वर्ष) डॉक्टर

----------Transition Music---------

(अस्पताल में पास-पास रखे दो बेड पर दो शरीर पड़े हैं। इनमें से एक इंसान है और दूसरा रोबोट। बाहर से देखने पर दोनों एक से दिखाई दे रहे हैं। दो लोग इनकी जांच-पड़ताल कर रहे हैं, इनमें एक अमित, डॉक्टर हैं। और दूसरे मेहर हैं, जो कि एक इंजीनियर हैं।)

अमित : सॉरी मेहर, मैंने तुम्हें इतनी रात को काम पर बुला लिया।

मेहर : कोई बात नहीं डॉक्टर साहब। काम तो काम है।

अमित : हां, वो तो ठीक है। आप लोगों को आमतौर से ऐसे रात-बेरात ड्यूटी पर नहीं जाना पड़ता है, इसीलिए मुझे कुछ अटपटा सा लगा। हम लोगों को तो ऐसी ड्यूटी की आदत ही है।

मेहर : लेकिन अब वक्त काफी बदल गया है डॉक्टर साहब।

अमित : आप मुझे बार-बार डॉक्टर साहब मत कहो मेहर। (हल्की हंसी के साथ) मेरा नाम अमित है।

मेहर : ठीक है अमित... ठीक है। वैसे, इन दिनों दुनिया से इंसानों से ज्यादा तो मशीनें ही हावी हो रही हैं। (हल्की हंसी के साथ) और हम इंजीनियरों को भी लगता है कि वक्त-बेवक्त ड्यूटी करने के लिए मशीनों का इंतजाम हो जाता तो अच्छा रहता।

अमित : (हंसते हुए) सही कहा तुमने....। अब तो दुनिया में मशीनों का ही बोलबाला है। हालांकि मुझे भी थौड़ा-बहुत मशीनी जिंदगी का अनुभव ज़रूर मिला है....।

मेहर : (टोकते हुए) तुम उसे सुपर-ह्यूमन लाइफ (Super Human Lives) भी कह सकते हो।

अमित : सुपर ह्यूमन ! तुम्हारा मतलब है महामानव ?

मेहर : बिल्कुल। तुम्हारे दाईं ओर जो निर्जीव शरीर पड़ा हुआ है वो एकदम से सामान्य लग रहा है। बिल्कुल किसी आम नौजवान की तरह। क्यों ? है ना ?

अमित : हां। बिल्कुल है।

मेहर : अगर तुम इसे चलता-फिरता देखते तो... तुम भी धोखा खा जाते। हकीकत में तो ये एक मशीन ही है।

अमित : अच्छा ! ये तो बिल्कुल आम इंसानों की तरह ही दिख रहा है। ऐसा क्या खास है इसमें ?

मेहर : इसकी खासियत का पता तो तब चलता जब इसे कोई ऐसा काम दिया जाता जिसे कोई आम इंसान ना कर सके।

अमित : क्या ये आदमी.... मेरा मतलब है ये मशीन सब-कुछ कर सकती है ?

मेहर : बिल्कुल। ये रोबोट सब कुछ सही तरीके से कर सकता है, बशर्ते कि फैसले लेने वाला इसका दिमाग सही-सलामत रहे।

अमित : क्या कहा ? इसमें दिमाग भी है ?

मेहर : अरे, नहीं... नहीं। दिमाग से मेरा मतलब इसके लॉजिक सिस्टम (Logic System) से है। इसके लॉजिक सिस्टम की भूल-भुलैया में तो इन दिनों हम लोग खुद ही उलझ गए हैं।

अमित : ओह...। आपकी बातों से तो मेरा सिर भी चकरा रहा है। मेरे ख्याल से आप आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के उस स्तर की बात कर रहे हैं, जिससे ये रोबोट चलता है। लेकिन...।

मेहर : चलिए, अमित जी, इन बातों को अभी छोड़िये...। लेकिन ये बताइये कि इस रोबोट के साथ जो ये आदमी जख्मी हुआ है, उसके बचने की कोई गुंजाइश है या नहीं ?

अमित : कहीं ये आपकी जान-पहचान का तो नहीं है ?

मेहर : नहीं... नहीं..। मैं तो बस यूं ही पूछ रहा हूं।

अमित : सरसरी तौर पर देखें तो इसके बचने की ज्यादा उम्मीद नहीं लगती। इसके सिर पर तो बहुत ज्यादा चोटें लगी हुई हैं। मुझे तो डर है कि कहीं ये ब्रेन डेड (Brain-dead) की स्थिति में ना पहुंच गया हो।

मेहर : ओह ! ये तो बहुत दुख की बात है।

अमित : लेकिन फिर, हमसे जो हो सकता है वो तो हम करेंगे ही। तुम्हारे यहां पहुचंने से पहले ही मैंने अपने सहयोगियों को यहां जरूरी इंतजाम करने को कह दिया था।

मेहर : लेकिन इसे यहां अलग कमरे में क्यों रखा हुआ है ? ट्रॉमा केयर यूनिट में तो इससे बेहतर इंतजाम थे... मेरा मतलब है कि...

अमित : तुम सही कह रहे हो। दरअसल इसके पीछे भी एक राज है ?

मेहर : राज ?

अमित : हां, अस्पताल में रोजमर्रा की जांच और इलाज के बीच ही हम लोग कुछ ऐसे मौके भी तलाश करते हैं जिस पर कुछ अलग से रिसर्च करने की गुंजाइश हो... और ये मामला भी कुछ ऐसा ही है।

मेहर : मतलब ये कि... आप इस इंसान के शरीर को अपनी रिसर्च के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं? लेकिन इसके रिश्तेदारों को...

अमित : देखो मेहर, तभी तो मैंने कहा था कि ये एक राज है। मुझे यकीन है कि इसके बारे में तुम किसी को कुछ नहीं बताओगे।

मेहर : वो तो ठीक है लेकिन ये बताओ कि इस मरीज के रिश्तेदारों को आप कैसे समझाएंगे।

अमित : रिसर्च का मतलब ये नहीं है कि हम मरीज के साथ कुछ भी ... उल्टा-सीधा प्रयोग कर लें। इस दौरान भी इलाज के पूरे नियम- कायदों का ध्यान रखा जाता है। बस फर्क इतना ही है कि ऐसे मरीजों पर कुछ उन चीजों को आजमाया जाता

है, जिनका प्रयोग हम लोग आमतौर से नहीं करते। और जहां तक रिश्तेदारों की बात है... तो इस मामले में हमें ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है।

मेहर : मतलब ?

अमित : दरअसल इस शख्स के साथ ऐसा कोई दस्तावेज नहीं मिला जिससे इसकी पहचान हो सके। जैसे इस रोबोट की गर्दन पर छपे हुए नंबरों से तो सबकुछ जानकारी मिल गई। ये जानना भी आसान हो गया कि इसे किसने और कब बनाया है, तभी मैं तुमसे संपर्क भी कर सका। लेकिन इस इंसान के साथ ऐसा कुछ नहीं था। चोटों की वजह से चेहरा ऐसा हो गया है कि उसकी फोटो से भी कोई मदद नहीं मिल पा रही है। हमने इंटरनेट पर उसके चेहरे की फोटो को डालकर भी देखा लेकिन कोई जानकारी नहीं मिल सकी। एक तरह से ये मान लो कि इसका कोई रिश्तेदार नहीं है।

मेहर : मेरा ख्याल है कि आपने अपनी रिसर्च शायद शुरू भी कर दी है।

अमित : हां, हम लोगों ने काम तो शुरू कर दिया है। उधर देखिए, उस कोने में हमारे एक साथी कंप्यूटर पर काम करते हुए दिख रहे हैं ना, वो इस जांच-पड़ताल के डॉक्यूमेंट्स तैयार कर रहे हैं। मेरी टीम में दो फिजिशियन और भी हैं डॉक्टर नैयर और डॉक्टर सरिता।

मेहर : अच्छा...।

अमित : लेकिन तुम्हारे रोबोट का क्या करना है ? क्या तुम इसे अपने वर्कशॉप में ले जाओगे ?

मेहर : देखो अमित, इतनी रात में तो कोई काम नहीं हो पाएगा। वैसे भी आजकल हमारी वर्कशॉप में ज्यादा ही काम चल रहा है और वहां जगह भी नहीं है। अब तुम्हें ही मेरी मदद करनी होगी।

अमित : बताओ...। मैं क्या मदद कर सकता हूं ?

मेहर : अगले दो दिन तक इस रोबोट को यहीं पर रखने की इजाजत चाहिए...। सिर्फ दो दिन तक..।

अमित : (असमंजस भरा स्वर) वैसे तो हम आमतौर से ऐसा नहीं करते...। इस रूम में और बेड लगाने की इजाजत नहीं है...। लेकिन फिर भी मैं कोशिश करूंगा। आपके लिए इतना तो कर रही सकता हूं।

मेहर : थैंक्यू अमित...। दरअसल कल बहुत सारा काम है। इंजीनियर्स का नये बैच का ट्रेनिंग सेशन भी शुरू हो गया है और उसका इंचार्ज भी मैं ही हूं। इसलिए...।

अमित : ठीक है.... ठीक है...। मैं समझ गया। एक - दो दिन बाद फिर मुलाकात होगी।

मेहर : ठीक है अमित। अभी मैं चलता हूं। बाय...। कुछ ज्यादा जरूरी हुआ तो मैं फोन कर लूंगा। (मेहर वहां से चला जाता है)

SCENE TRANSITION MUSIC

(मेहर की क्लास का दृश्य / युवा इंजीनियर्स के एक बैच का ट्रेनिंग सत्र चल रहा है)

लिली : सर, अरुण को आज कुछ देर हो जाएगी।

मेहर : क्यों ? आज उसको ऐसी कौन सा बड़ा काम आ गया ?

निधि : सर, दरअसल अरुण के पिताजी को नसों (Nerve related) से संबंधित कुछ पुरानी बीमारी है। उनको हर पंद्रह दिनों के बाद चेकअप कराने और डॉक्टर से सलाह के लिए जाना पड़ता है। अरुण आज अपने पिताजी के साथ ही गया है।

मेहर : अच्छा । नसें (Nerves) यानी तंत्रिका तो हर तरह की समझ-बूझ के लिए बहुत ही जरूरी हैं। नसें सही तरीके से काम ना करें तो फिर ना तो हम देख सकते हैं, ना सुन सकते हैं और ना ही अपनी त्वचा से कुछ महसूस कर सकते हैं। इंसान का तंत्रिका तंत्र अपने आप में बहुती ही जटिल है। बस, ये जान लो कि दुनिया के

बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी इंसान के नर्वस सिस्टम की पहेली को पूरी तरह से नहीं समझ सके हैं।

रघु : सर, क्या हम नर्वस सिस्टम का कोई आसान वर्जन (Version) बनाकर उसे रोबोट में नहीं लगा सकते ?

मेहर : रघु, कहना तो आसान है लेकिन करना बहुत मुश्किल। अगर ऐसी कोई कोशिश करते भी हैं तो ये तय करना मुश्किल हो जाएगा कि इस आसान वर्जन में क्या शामिल करें और क्या छोड़ें। सारी चीजें आपस में इतने करीने से जुड़ी हुई हैं और एक दूसरे पर इस कदर निर्भर हैं कि दिमाग चकरा जाएगा।

निधि : सर, एक दिन लिली मुझे बता रही थी कि कृत्रिम न्यूरॉन बनाने और उन्हें जोड़ने के मामले में भी काफी काम हो चुका है।

लिली : हां, मैंने तो बस किसी ऑनलाइन जर्नल में एक लेख पढ़ा था। उसमें ये भी लिखा था कि बीस-तीस साल पहले इस दिशा में उम्मीद की बहुत किरणें दिखीं थीं, लेकिन बाद में इस पर बहुत ज्यादा काम नहीं हो पाया।

रघु : सर, रोबोट के इंटेलीजेंस सिस्टम में सारे निर्देश हम ही डालेंगे या फिर उसे खुद ही सीखने की आजादी देंगे ?

मेहर : वाह रघु, तुमने बहुत अच्छा सवाल किया। मुझे खुशी है कि तुम विषय से नहीं भटके हो। दरअसल जिस बारे में लिली बता रही थी उसे एएनएन (ANN) यानी आर्टिफीशियल न्यूरल नेटवर्क (Artificial Neural Network) कहते हैं। आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के क्षेत्र में एएनएन (ANN) की बहुत बड़ी भूमिका है।

लिली : लगता है कि हम किसी बड़ी कामयाबी की ओर बढ़ रहे हैं। मेरा मतलब है कि बुद्धि के लिहाज से मशीनें जल्द ही इंसानों को भी पीछे छोड़ देंगी।

रघु : मुझे तो फिलहाल ऐसी कोई उम्मीद नजर नहीं आती। ये सच है कि हर साल बड़ी संख्या में बुद्धिमान रोबोट बनाए जा रहे हैं, लेकिन फिर भी मुझे किसी बहुत

बड़ी कामयाबी पर संदेह ही है। इंसानी बुद्धि की बराबरी या फिर उसके पार जाना मशीनों के लिए इतना आसान नहीं है।

मेहर : तुम दोनों की बातें सही भी हैं और गलत भी। देखो, जहां तक शतरंज जैसे खेलों की बात है तो कंप्यूटर सॉफ्टवेयर... दुनिया के बेहतरीन खिलाड़ी को बहुत आसानी से मात दे देते हैं। लेकिन जब बात सामान्य समझदारी की आती है तो फिर बाजी पलट जाती है। भाषा का मामला हो या फिर तर्क करने की काबिलियत..., इन भारी-भरकम सॉफ्टवेयर की समझ का स्तर चार-पांच साल के बच्चे के बराबर भी नहीं है।

रघु : लेकिन सर, मशीनें खुद भी तो सीख रही हैं ना ?

निधि : हां सर...। और साथ ही उनकी सीखने की क्षमता भी लगातार बढ़ रही है। मेरा मतलब है कि वो चीजों को ज्यादा बेहतर तरीके से समझ रही हैं।

लिली : तुमने एक शब्द सुना होगा "डीप लर्निंग" (Deep Learning) । इस शब्द का इस्तेमाल भी इसीलिये हो रहा है।

मेहर : लेकिन आप लोगों को ये बात समझनी चाहिए कि आज का इंसान बहुत कम वक्त में बहुत ज्यादा कामयाबी की कोशिश कर रहा है। जरा अपने, खुद के विकासक्रम को भी देखो। आधुनिक इंसान इस धरती पर कुछ लाख साल पहले ही आया है। ये सच है कि इंसान के पास कुछ जन्मजात क्षमताएं थीं। लेकिन फिर भी पूरी दुनिया में खुद की बादशाहत कायम करने के लिए इंसान को अच्छा-खासा वक्त लगा।

लिली : सर, तो क्या हम ये मानें कि मशीनों को इंसानी बुद्धि के स्तर पर लाने के लिए अभी लाखों वर्षों का इंतजार करना होगा ?

मेहर : नहीं.. नहीं। मेरा ऐसा बिल्कुल भी मतलब नहीं है। जैसे-जैसे कंप्यूटरों का विकास हो रहा है, आर्टिफीशियल न्यूरल नेटवर्क की बदौलत उनकी क्षमता भी बढ़ती जा रही है। यही वजह है कि आज हम बहुत बड़ी मात्रा में आंकड़ों को सहेज पा रहे हैं। आप गूगल को देख लीजिए। महज तीन दशक पहले ही इसकी शुरुआत हुई

और इतने कम वक्त में ही ये एक बेहतरीन सर्च इंजन के तौर पर काम कर रहा है। हम लोग इससे ना सिर्फ सूचनाएं हासिल कर रहे हैं बल्कि इसमें मौजूद इमेज और दूसरे आंकड़े... रोबोट्स की ट्रेनिंग में भी मददगार साबित हो रहे हैं।

निधि : इसका मतलब ये हुआ कि मशीनों के सीखने का तरीका लगातार बेहतर हो रहा है ?

मेहर : बिल्कुल...। चीजें तो लगातार बदली ही रही हैं। जरा उस वक्त को याद करो जब एआई (AI) यानी आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस की बस आहट ही सुनाई देती थी। एक तरह से वो सिंबोलिक एआई (Symbolic AI) का दौर था। यहां तक कि मार्विन मिंस्की (Marvin Minsky) जैसी शख्सियत का भी कहना था कि ये प्रोग्रामर की ही जिम्मेदारी है कि सिस्टम को चलाने वाला पूरा प्रोग्राम तैयार करे। आपको ये तो मालूम ही होगा कि मार्विन मिंस्की काफी मशहूर कंप्यूटर वैज्ञानिक थे और और उनको आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का पितामह भी कहा जाता है। बाद में एएनएन यानी आर्टिफीशियल न्यूरल नेटवर्क ने पूरे नजरिये को ही बदल डाला। अब मशीनें... डेटा यानी आंकड़ों को समझते हुए खुद ही सीखने भी लगीं। साल उन्नीस सौ अस्सी (1980) के बाद से न्यूरोसाइंस के क्षेत्र में हुई नई खोजें भी आर्टिफीशियल न्यूरल नेटवर्क को और बेहतर बनाने में मददगार साबित हुईं।

लिली : क्या आपकी कंपनी ने कोई अनूठी चीज भी बनाई ? मेरा मतलब है कि कुछ ऐसा.. जिससे कि बहुत बड़ा बदलाव आया हो।

निधि : हां सर, आखिर आपकी कंपनी के कामयाब होने का असली राज क्या है ?

मेहर : (हल्की हंसी के साथ) अब ये आपकी भी कंपनी है। ये सच है कि हर कंपनी के कुछ खास राज होते हैं और हम भी इससे अलग नहीं है। लेकिन जैसे-जैसे आप लोग हमारी कंपनी के सिस्टम के साथ जुड़ते जाएंगे... सारे राज आपके सामने खुदबखुद खुलते चले जाएंगे।

रघु : सर, ये तो बताइये कि क्या हमारी कंपनी इस स्थिति में है कि वैसे बुद्धिमान साइबोर्ग (Intelligent Cyborgs) बना सके, जैसे कि हम अक्सर फिल्मों में देखते हैं।

मेहर : देखो रघु, हम लोग इंजीनियर हैं, कोई फिल्म निर्माता तो हैं नहीं। अगर आप ऐसी कोई उम्मीद लगाए बैठे हैं तो भी उसके लिए हकीकत की ठोस जमीन तैयार करना जरूरी है। यूं देखा जाए तो, हाल से सालों में एआई के लिहाज से दुनियाभर में बहुत अच्छी प्रगति हुई है। हालांकि हमारी कंपनी ने मशीन लर्निंग को ज्यादा तेज करने के लिए एक अलग ही तरीका अपनाया हुआ है। हम कई मुश्किल मुद्दों को हल करने के बेहद करीब पहुंच चुके हैं। ये और बात है कि बाजार में हमसे प्रतियोगिता करने वाली कोई भी कंपनी अभी उस स्तर तक नहीं पहुंच सकी है।

(फोन की घंटी बजती है / मेहर अपना फोन निकालता है)

मेहर : *(ट्रेनीज़ से कहते हुए)* मुझे माफ कीजिएगा। ये बहुत जरूरी कॉल है, मुझे फोन उठाना होगा। (*कॉल रिसीव करता है*) जी हां...मेहर बोल रहा हूं। कौन.. डॉक्टर नैयर... जी सर... कहां ? हॉस्पिटल से ? ठीक है डॉक्टर नैयर। जी बताइये .. बताइये... क्या कहा ? आप मजाक तो नहीं कर रहे ? ओह... ऐसा कैसे हो गया ? ठीक है.. ठीक है.. मैं अभी पहुंचता हूं सर। बस... आधे घंटे में पहुंच जाऊंगा। जी सर... बिल्कुल। (फोन कॉल पूरी हो जाती है)

रघु : क्या हुआ सर ? कुछ गड़बड़ है क्या ? आप बहुत परेशान लग रहे हैं।

मेहर : (*खुद ही .. बुदबुदाते हुए)* पता नहीं ऐसा कैसे हो गया ? आजतक तो ऐसा कभी भी नहीं हुआ।

निधि : क्या हुआ सर ? आप ठीक तो हैं ना ? पानी लाऊं क्या ?

मेहर : *(संभलने के अंदाज में)* नहीं... नहीं.. मैं ठीक हूं। सॉरी... मुझे अभी हॉस्पिटल जाना होगा।

लिली : सर, क्या वहां आपके कोई रिश्तेदार एडमिट हैं ? हम लोग आपके साथ चलें क्या ?

मेहर : शुक्रिया लिली...। अभी ऐसी कोई जरूरत नहीं है। (फिर से खुद ही बुदबुदाते हुए) लेकिन ऐसा कैसे हो गया.. वो भी इतना जल्दी..।

निधि : सर, मेरे ख्याल से हम में से किसी एक को आपके साथ चलना चाहिए।

लिली : मैं चली जाती हूं। मैं दूसरी क्लासेज़ के नोट्स बाद में निधि से ले लूंगी। सर, आप मना मत कीजिए। आपको इस तरह देखकर हमें काफी फिक्र हो रही है।

मेहर : ठीक है...। तुम मेरे साथ आना ही चाहती हो तो चलो...। हमें जल्दी ही निकलना है।

ट्रेनीज / एक स्वर में : बाय सर...। अपना ख्याल रखिएगा।

SCENE TRANSITION MUSIC

(मेहर कार चला रहा है / ट्रैफिक का शोर सुनाई देता है)

लिली : सर, मुझे मालूम है कि आप बहुत ज्यादा तनाव में हैं। लेकिन अगर आप अपनी परेशानी को हमसे बांटेंगे तो शायद आपका तनाव कुछ कम हो जाए।

मेहर : लिली, मेरी चिंता किसी इंसान को लेकर नहीं है। दरअसल, डॉक्टर नैयर ने मुझे ये बताने के लिए फोन किया था हमारा एक होशियार रोबोट हॉस्पिटल से लापता हो गया है।

लिली : रोबोट ! सर, क्या उसे किसी खास ड्यूटी में लगाया गया था ?

मेहर : नहीं। इस रोबोट को एक आदमी के साथ स्पेशल असाइनमेंट के दौरान एक कार में भेजा गया था। रास्ते में उनका भयानक एक्सीडेंट हो गया। वहां से गुजर रहे एक ट्रक ड्राइवर ने उनको देखा और अस्पताल पहुंचा दिया। उस ड्राइवर को लगा कि वो दोनों इंसान ही हैं।

लिली : ओह...। ये तो बड़ी अजीब बात है। आपका मतलब है कि वो रोबोट भी पूरी तरह से आदमियों की जैसी हरकत करता है ?

मेहर : दरअसल एक्सीडेंट के बाद दोनों होश खो बैठे थे। ऐसे में किसी हरकत का तो सवाल ही नहीं उठता। हां, लेकिन उस रोबोट का चेहरा और कद-काठी बिल्कुल किसी नौजवान की तरह ही लगती है... यही कोई तीस साल की उम्र के आसपास की। यहां तक कि हॉस्पिटल में भी डॉक्टर उसे एक इंसान ही समझ बैठे थे।

लिली : तो क्या फिर डॉक्टर उसका इलाज करने में जुट गये थे ? किसी इंसान की तरह ?

मेहर : नहीं ... नहीं..। डॉक्टर अमित तो जल्द ही समझ में आ गया कि वो एक मशीन है। उन्होंने मुझे हॉस्पिटल बुलाया था। मैंने ही उनसे गुजारिश की थी कि वो रोबोट को एक-दो दिन तक वहीं रहने दें। वो मान भी गये थे लेकिन फिर...।

लिली : फिर.. क्या सर ?

मेहर : वो देखो... सामने ही हॉस्पिटल है। जब तुम्हारी मुलाकात डॉक्टर नैयर से होगी तो सबकुछ तुम्हारी समझ में आ जाएगा।

लिली : ठीक है सर।

(कार रुकती है / कार को पार्क करके लिली और मेहर डॉक्टर नैयर के रूम में जाते हैं)

नैयर : आइये ... आइये मेहर जी...। मैं आपका ही इंतजार कर रहा था। साथ में कौन हैं आपके?

मेहर : ओह सर... मैं तो परिचय कराना ही भूल गया। ये लिली हैं। इन्होंने अभी हाल ही में हमारी कंपनी ज्वाइन की है।

नैयर : देखिए, जिस वजह से आपको यहां आना पड़ा... वो बहुत गंभीर मसला है। लिली के सामने ये सब बातचीत करना ठीक रहेगा ?

मेहर : हां... हां..सर... कोई दिक्कत नहीं है। लिली भी तो अब हमारी कंपनी की ही कर्मचारी है।

नैयर : मेहर जी, मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा है कि आखिर ये सब कैसे हुआ। हॉस्पिटल से वो रोबोट और इंसान... दोनों गायब हो गए।

मेहर : आपको इसका पता कब चला डॉक्टर साहब ?

नैयर : सुबह के वक्त ही पता चला। डॉक्टर अमित और वरुण आज छुट्टी पर हैं। जैसे ही मैं हॉस्पिटल पहुंचा, सिस्टर दौड़ते हुए मेरे पास आई। वो रो रही थी। उसे हिदायत थी कि इस बारे में किसी को भी कोई जानकारी नहीं देनी है। इसलिए उसने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। यहां तक कि हॉस्पिटल सुपरिटेंडेंट को भी खबर नहीं थी।

मेहर : तो अब तक उन दोनों का कोई सुराग लगा है या नहीं ?

नैयर : कुछ भी सुराग नहीं लगा है मेहर जी। कुछ भी नहीं। प्लीज़, आप लोग दो मिनट रुकिए, मैं अभी आता हूं। मुझे एक मरीज के परिजनों को कुछ मशवरा देना है। बस, दो मिनट में वापस आता हूं।

मेहर : ठीक है डॉक्टर नैयर। आप होकर आइये..। हम यहीं इंतजार करते हैं।

(डॉक्टर नैयर चले जाते हैं)

लिली : सर, मुझे तो ये रहस्य कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। आखिर हुआ क्या है ?

मेहर : डॉक्टर नैयर ने क्या कहा, वो तो तुमने सुन ही लिया ना। वो दोनों हॉस्पिटल से लापता हो गए हैं।

लिली : सर, एक बात बताइये...। क्या वास्तव में आपको उस इंसान के बारे में कुछ भी पता नहीं है ?

मेहर : ***(हकलाहट के साथ / मानो कोई गलती पकड़ी ली गई हो)*** क्यों .. क्यों पूछ रही हो... मुझे तो...बस...।

लिली : सर, परेशान मत होइये। हमारे प्रोफेशन में आपका इतना बड़ा नाम है। मुझे लग रहा है कि शायद कहीं कुछ गड़बड़ हो गई है। आप मुझसे कुछ मत छुपाइये सर।

मैं भले ही प्रोफेशलन तौर पर एकदम जूनियर हूं लेकिन कभी - कभी छोटों की बातें भी बड़ा काम कर जाती हैं।

मेहर : हां लिली...। मैं उस शख्स को जानता हूं। वो लोकेश है। वो एक बड़ी लैब में साइंटिफिक असिस्टेंट के तौर पर काम करता है। बहुत ही महत्वाकांक्षी है लोकेश।

लिली : तो इसमें दिक्कत क्या है सर ? आज की दुनिया में तो हर कोई महत्वाकांक्षी ही है।

मेहर : लिली, शायद तुमको मालूम ही होगा कि यहां से करीब दो सौ किलोमीटर दूर एक पहाड़ी है... जिसकी चोटी पर एक मैदान सा भी है।

लिली : हां सर, मुझे मालूम है। वो जगह बहुत घने जंगलों से घिरी हुई है। मैंने सुना है कि जहरीले सांप-बिच्छुओं के डर से लोग वहां जाने से डरते हैं। वहां शायद... कभी-कभार ही कोई जाता होगा। वहां कुछ ऐसे पेड़-पौधे भी.....।

मेहर : हां, बिल्कुल सही सुना है तुमने। वहां कुछ ऐसे पौधे भी हैं जो बहुत ज्यादा जहरीले हैं। ऐसे ही कुछ पौधों की पत्तियां किसी खुले घाव के संपर्क में आने पर इंसान पर जानलेवा असर भी छोड़ जाती हैं। लेकिन निर्भय.. यानी वो रोबोट और लोकेश दोनों ने ही उस खतरनाक जंगल में घुसकर पहाड़ी पर जाने की कोशिश की थी।

लिली : लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों किया ?

मेहर : ऐसा कहा जाता है कि उस पहाड़ी की चोटी पर एक क्रेटर (Crater) यानी बड़ा सा गड्ढा है। इस जगह पर किसी आकाशीय पिंड (Asteroid) के टकराने से ये गड्ढा बना है। करीब पांच साल पहले किसी भूविज्ञानी ने हेलीकॉप्टर से इस इलाके का सर्वे किया था और उन्होंने भी इस बात की पुष्टि की थी। उन्होंने कुछ ऐसी बातें भी बताईं थीं जिनमें लोकेश की बहुत ज्यादा दिलचस्पी थी।

लिली : अच्छा ! ऐसी क्या बातें बताई थीं उन्होंने ?

मेहर : उन्होंने कहा था कि उस क्रेटर में खास किस्म के तत्व हैं। कुछ ऐसी धातुएं हैं जो धरती पर नहीं पाई जातीं। एक लोकल न्यूजपेपर को दिए अपने इंटरव्यू में उन्होंने ये भी कहा था ये धातुएं किसी चमत्कारिक दवा की तरह भी काम कर सकती हैं, बशर्ते कि सही तरीके से उनका इस्तेमाल किया जाए।

लिली : सर, मुझे तो ये कोरी बकवास ही लग रही है। कोई भूविज्ञानी भला ऐसी बातें कैसे कह सकता है ? वो भी बगैर किसी पुख्ता जांच-पड़ताल के।

मेहर : तुम्हारी बात सही है... लेकिन ... लोकेश उस भूविज्ञानी की बातों को भूल नहीं सका। इन बातों ने उसके मन में क्रेटर के अंदर छिपी बेशकीमती धातुओं को पाने की सनक पैदा कर दी।

लिली : बेशकीमती धातुओं को पाने की सनक ?

मेहर : हां लिली..। लोकेश उन धातुओं को हासिल करके बेशुमार दौलत कमाना चाहता था। लोकेश का मकसद था कि उन धातुओं से वो चमत्कारिक दवा बनाए और एक कंपनी खोलकर दुनियाभर में उनका कारोबार करे।

लिली : अब कुछ-कुछ कहानी मेरी समझ में आ रही है। तो सर, आपका कहने का मतलब ये है कि लोकेश की बातों ने रोबोट को भी लालची बना दिया और..... और फिर दोनों दौलतमंद बनने की ख्वाहिश लेकर निकल पड़े ....। ओह..... मुझे तो इस सब पर बिल्कुल यकीन नहीं हो रहा है सर।

मेहर : हां... बिल्कुल यही तो हुआ। जब दोनों उस रहस्यमय पहाड़ी की ओर जा रहे थे, तभी उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया।

(नैयर का कमरे में प्रवेश होता है / नैयर अपनी सीट पर बैठते हैं)

नैयर : मेहर जी, अब बताइये जरा... क्या किया जाए..। हम तो बड़ी मुसीबत में पड़ गए हैं।

मेहर : जी सर...। मुसीबत तो बड़ी ही है। मुझे एक बात बताइये। क्या डॉक्टर अमित पूरी रात इसी कमरे में काम कर रहे थे ? अगर वो रातभर यहीं थे तो उन्होंने उस घायल आदमी के बारे में जुटाई जानकारियां इस कंप्यूटर में दर्ज की होंगी ?

नैयर : हां... हां... बिल्कुल। ऐसा तो वो हमेशा ही करते हैं। हर मरीज से जुड़ी जानकारी हमेशा संभाल कर रखी जाती है। और ये गुजरे जमाने का डेस्कटॉप कंप्यूटर तो अमित का पसंदीदा कंप्यूटर है। नया कंप्यूटर तो उन्हें बिल्कुल भी पसंद नहीं। लेकिन आप ये सब क्यों पूछ रहे हैं ?

मेहर : **(घबराहट भरा स्वर)** दरअसल... ये.... सब.. इसलिये... ।

लिली : सर, क्या हुआ सर ? आपको कोई दिक्कत तो नहीं ?

नैयर : मेहर जी, आपको कोई परेशानी तो नहीं ?

मेहर : नहीं डॉक्टर साहब..... कोई परेशानी नहीं..। मैं ठीक हूं। दरअसल... हमारी मशीन यानी निर्भय रोबोट ने कुछ बहुत ही नया... बेहद चमत्कारिक काम कर दिया है। हमारे रोबोट ने खुद की समझ का इस्तेमाल करते हुए एक आदमी का सफल इलाज किया है और उसे नई जिंदगी दी है।

नैयर : ये कैसी बेतुकी बातें कर रहे हैं आप ? (कुछ गुस्से में) आपक दिमाग तो नहीं फिर गया है मिस्टर मेहर?

मेहर : नहीं सर...। मैं पूरे होश में हूं और बिल्कुल सही बात कह रहा हूं। आपको भी ये जानकर खुशी होगी कि हम लोगों ने निर्भय रोबोट को इस क्षमता के साथ विकसित किया था कि वो अंतरिक्ष अभियानों के दौरान मेडिकल हेल्प (चिकित्सकीय मदद) दे सके। बाद में किसी वजह से कंपनी के साथ हमारा करार रद्द हो गया और रोबोट को कोई ट्रेनिंग नहीं दी जा सकी। लेकिन मैंने उसकी इस विशेष क्षमता को नष्ट नहीं किया बल्कि उसे हाइबरनेट स्थिति में रख दिया। यानी उसमें क्षमता तो थी, लेकिन रोबोट उस क्षमता का इस्तेमाल नहीं कर सकता था। बाद में हमने अपने इस रोबोट को दस साल के लिए किराये पर दे दिया था।

नैयर : तो आपके कहने का मतलब ये है कि उसका हाइबरनेशन पीरियड खत्म हो चुका है और उसने अपनी छिपी हुई काबिलियत को फिर से हासिल कर लिया है ?

मेहर : जी बिल्कुल...। इसी बात से तो खुद मैं भी हैरान हूं डॉक्टर नैयर। बस, इस बारे में... मैं कुछ अंदाजा ही लगा सकता हूं।

लिली : क्या अंदाजा है सर आपका ? कैसे हुआ होगा ये सब ?

मेहर : देखो, निर्भय रोबोट किसी भी कंप्यूटर से आसानी से जानकारियां ले सकता है। डॉक्टर अमित ने कंप्यूटर में जो भी जानकारियां दर्ज की होंगी, उनको रोबोट ने चुटकियों में ही पढ़कर समझ लिया होगा। ये तो मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है कि रोबोट ने खुद को कैसे ठीक किया ... लेकिन मुझे ये पूरा यकीन है कि साथ वाले घायल आदमी का ऑपरेशन उस रोबोट ने ही किया है।

नैयर : ये कैसी बेसिरपैर की बाते कर रहे हैं आप...! मेहर जी... न्यूरोसर्जरी कोई बच्चों का खेल है क्या ?

मेहर : सर, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। लेकिन.. मैं फिर से कह रहा हूं कि ये नामुमकिन सी लगने वाली घटना हुई जरूर है... और अचानक ही.. रातोंरात हुई है। इसे हम मशीन की डीप लर्निंग का नतीजा भी कह सकते हैं। रोबोट ने खुद की समझ का इस्तेमाल करते हुए कुछ नया सीख लिया। बस आप ये समझ लीजिए कि रोबोट के लिए ये यूरेका मूमेंट (Eureka Moment) जैसा है...। यानी एक ऐसा क्षण... जिसमें पिछली बाधाओं का अचानक से ही समाधान निकल आए...। सोचते.. सोचते... किसी नई समस्या का समाधान... वो भी एक रोबोट द्वारा! मैं तो खुद ही हैरान हूं... हमने तो ऐसी कल्पना भी नहीं की थी।

लिली : आपके ख्याल से वो दोनों अभी कहां होंगे ?

मेहर : यहां से दो सौ किलोमीटर दूर... पश्चिम की दिशा में।

नैयर : मेहर जी, ये क्या कह रहे हैं आप ? क्या तुमने उन्हें देखा है ? पूरी सच्चाई बताओ मिस्टर मेहर ! सच-सच बताओ आप... । अब तो हमें पुलिस को भी जानकारी देनी होगी।

मेहर : (खुद से बुदबुदाते हुए) यूरेका मूमेंट इतनी जल्दी आ जाएगा... इसका तो हमें भी अंदाजा नहीं था। मुझे ये तो मालूम था कि ये रोबोट खुद सीखते हुए... नई मुश्किलों को पार करता जाएगा... लेकिन ... ये सब इतना जल्दी होगा... इसका अंदाजा नहीं था...।

लिली : सर, प्लीज...। डॉक्टर नैयर को बताइये कि अब उनको कैसे खोजा जाए ?

नैयर : मेहर जी... हम बहुत बड़ी मुश्किल में हैं। आप मुझसे कुछ ना छिपाइये...। सब-कुछ बताइये प्लीज़....प्लीज़ मेहर जी...प्लीज़....। (आवाज़ लगातार धीमी होती जाती है)

CLOSING MUSIC